S. S. College, Jehanabad
B. A. Part-I Psychology (Subsidiary)
Teacher- A. K. Sinha Date 15.04.21
Topic - Theory of Learning. पृष्ठ-1

मानव प्राणी जन्म से मृत्युपर्यन्त प्रतिपल अपने परिवेश में कुछ न कुछ सीखता रहता है। यह मानव प्राणी की जन्मजात प्रवृति है। वातावरण से मिले नये अनुभूतियों को अपने अन्दर ग्रहण करते रहता है। सीखना एक उच्च मानसिक प्रक्रिया है। परन्तु मानव प्राणी अपने वातावरण से क्या सीखता और कैसे सीखता है? क्यों सीखता है इन समस्याओं को शिक्षण के क्षेत्र में कार्यरत मनोवैज्ञानिको ने पूर्ण सफलता नही प्राप्त कर सके हैं। Hilgard के अनुसार शिक्षण के क्षेत्र से जुड़े छः प्रश्न सामने मुँहबाये खड़े दिखते हैं। ये प्रश्न इस प्रकार हैं:-

1. शिक्षण में सीखने वाले के अपनी योग्यता का क्या स्थान है?
2. अभ्यास का क्या महत्व है? क्या अभ्यास स्वतः शिक्षण के लिए सहायक है? क्या अंधअभ्यास से हानि नही होती है?
3. क्या शिक्षण पर प्रणोदन, प्रोत्साहन, पुरस्कार तथा दण्ड आदि का प्रभाव पड़ता है?
4. परिस्थिति के बोध (Understanding) तथा अर्न्तदृष्टि (Insight) का शिक्षण में कैसा और कितना महत्व है?
5. शिक्षण का प्रभाव दूसरे समस्याओं के समाधान में या सीखने में क्यों और कैसे पड़ता है?
6. शिक्षण से प्राणी के तंत्रिका-तंत्र पर क्या प्रभाव पड़ता है

शिक्षण से जुड़े उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर या समाधान के दिशा में ही इस क्षेत्र से जुड़े मनोवैज्ञानिकों द्वारा शिक्षण से सम्बन्धित अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है जिसके द्वारा वे उपर्युक्त प्रश्नो के उत्तर देने का प्रयास किये हैं।

Trial & Error Theory of Learning or Connectionism Theory

इन्हीं सिद्धान्तों के क्रम में Thorndike द्वारा प्रतिपादित शिक्षण के सम्बन्धित 'Connectionism Theory' अथवा प्रयत्न एवं भूल सिद्धान्त (Trial & Error Theory of Learning) एक कड़ी है।

E. L. Thorndike अमेरिका के एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक एवं शिक्षाशास्त्री थे। इन्होंने 1898 ई० में बिल्ली, चूहे तथा मुर्गी के बच्चों पर किये प्रयोगों से प्राप्त निष्कर्षों को 'Animal Intelligence' नामक पुस्तक में प्रकाशित किया। इसी पुस्तक में शिक्षण सिद्धान्त को भी वर्णित है जिस सिद्धान्त को Connectionism Theory of Learning अथवा Trial and Error Theory of Learning के नाम से जाना जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार शिक्षण क्रिया की उत्पत्ति एक ऐसी परिस्थिति में होती है जो प्राणी के लिए नवीन होती है। सीखने की क्रिया द्वारा प्राणी की सही प्रतिक्रिया और उस नई परिस्थिति के बीच सम्बन्ध की स्थापना होती है यह सभी प्रकार के शिक्षण-परिस्थितियों में माना जाता है। इस प्रकार नई परिस्थितियों तथा सही क्रियाओं के बीच सम्बन्ध की स्थापना का उल्लेख उन्होंने उत्तेजना-प्रतिक्रिया के बीच सम्बन्धों के आधार पर किये हैं। उनके (Thorndike) के अनुसार सीखने की क्रिया में प्राणी के समक्ष जो नई एवं कठिन परिस्थिति उत्पन्न होती है वह एक समस्या का रूप ले लेता है, उस समस्या के समाधान के दिशा में किसी खास क्रिया को करने के लिए बाध्य होता है अथवा अनुकूल समायोजन स्थापित करने में असफल होता है। इस प्रकार प्राणी द्वारा किया गया अपेक्षित क्रिया ही अनुकूल समायोजन के दृष्टिकोण से सही अनुक्रिया होती है और

शिक्षण प्रयास द्वारा हो गई उत्तेजना तथा सही प्रतिक्रिया के बीच सम्बन्ध स्थापित करता है। आरम्भ में नई परिस्थिति (Situation) (उत्तेजना) के बीच सही प्रतिक्रियाओं का सामंजस्य स्थापित नहीं होता है बल्कि कुछ गलत प्रतिक्रियाएँ होती हैं परन्तु शिक्षण-प्रयास के बाद प्राणी उद्दीपन के प्रति सही अनुक्रिया का दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करने के योग्यता प्राप्त कर लेता है इसी लिए इस सिद्धान्त को Trial & Error Theory of Learning के नाम से जाना जाता है। इस सन्दर्भ में Tolman का कहना है कि पशु अधिगम (शिक्षण) के लगभग सभी सिद्धान्त थॉर्नडाइक से सहमति अथवा असहमति के रूप में प्रस्तुत हुए हैं और सभी सिद्धान्तों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से Thorndike को ही अपना आधार बिन्दु बनाया है।" स्वीकार्य रूप से Thorndike के विचार उनकी पुस्तक शिक्षा मनोविज्ञान (Educational Psychology) 1913-1914 में प्रस्तुत हुए।

Thorndike द्वारा प्रतिपादित (Trial & Error Theory of Learning) शिक्षण के प्रयत्न एवं भूल सिद्धान्त उनके द्वारा बिल्ली तथा कुत्तों पर किये गये प्रयोगों परीक्षणों पर आधारित है। इनके द्वारा बिल्ली पर किया गया एक प्रयोग का उल्लेख करना यहाँ पर युक्तिसंगत प्रतीत होता है। इन्होंने एक बिल्ली को 24 घंटा भूखा रखा और उसे एक पिंजड़े में बन्द कर दिया, उस पिंजड़े में बाहर निकलने का एक ही द्वार था जो कपाट या लीवर से बन्द कर दिया गया और बाहर में एक बर्तन में भुनी हुई मछली रख दी गई। पिंजड़ा का बनावट ऐसा था कि बाहर रखी हुई मछली बिल्ली को दिखाई पड़ सके। भूखी बिल्ली मछली को बाहर देखकर उछल कूद करने लगी। वह बाहर निकलने के लिए अनेक प्रकार की अनुक्रियाएँ करने लगी जैसे पिंजड़े को हिलाना, नोचना, खरोंचना आदि इसी क्रम में उसका पंजा कपाट पर पड़ गया और पिंजड़ा खुल गया बिल्ली बाहर निकल कर मछली खा कर संतुष्ट हो गई।

शेष पृष्ठ - 4 पर